केते लै-लै मुकर पाए

जलज्योति शाह जी को गुरु महाराज हमेशा प्यार से सुथरा ही बुलाते थे। सुथरा बचपन से ही हंसमुख, स्पष्टवादी एवं विनोदप्रिय था। वह मज़ाक-मज़ाक में ही बड़ी गूढ़ एवं रहस्य की बातें कर जाता था। गुरु महाराज अपने लाडले के मनोभावों को जानकर मुस्कराते रहते थे। यह घटना तब की है जब सुथरा जी ५-६ वर्ष के ही थे।

अमृतसर में गुरु महाराज के निवास स्थान के पास हलवाई की दुकान थी जिसे सब 'शाह जी दी हट्टी' के नाम से जानते थे। गुरु महाराज का सेवक भगतु 'सुथरा जी' को लेकर शाह जी की दुकान पर गया व उससे बोला - सतगुरु ने कहा है कि यह सुथरा आप से दूध मिठाई जो भी माँगे दे दिया करो। जब महीना हो जाए हिसाब करके बता देना। आप के पैसे मिल जायेंगे। सुथरा 'शाह जी दी हट्टी' पर रोज़ आता, मिठाई खाता और मज़े करता। एक दिन शाह जी (हलवाई) अपने किसी परिचित शिवराम जी से बातें कर उसे बता रहे थे कि 'यह बालक जिसे हमारे शहनशाह रावी नदी के किनारे से उठा कर लाए थे अब यह बालक ५-६ वर्ष का हो गया है। सतगुरु इसे अपने बच्चों से भी ज्यादा प्यार करते हैं।' 'इसका कोई हिसाब भी है कि इसी तरह जो दिल करे आकर ले जाता है?' शिवराम ने कहा।

'हिसाब किस के साथ करना है। अगर पैसा न भी मिले तो कोई बात नहीं, पर शहनशाह किसी का एक पैसा भी रखने को तैयार नहीं होंगे। वे दीन दुखियों के मालिक, गरीब नवाज़, भक्तवत्सल हैं। मैं जो जाकर कहूँगा, वह पैसे दे देंगे।' शाह जी ने कहा।

अभी यह बातें शाह जी अपने परिचित से कर ही रहे थे कि 'सुथरा' फिर आ गया और दो लड्डू बूंदी के माँगे। शाह जी ने दो लड्डू कागज़ पर रखे व

'सुथरे' को दे दिए। सुथरे ने दोनों लड्डू किसी और बालक को दे दिए। जो उसके साथ खेलता-खेलता आ गया था। शाह जी ने सुथरे से कहा-'यह क्या? इसके पैसे कौन देगा?' सुथरा हँसते हुए बोला - 'जो लड्डू खाएगा वह पैसे देगा या वह देगा जिसने इसको इस दुनिया में भेजा है।'

छोटे से बालक का उत्तर सुनकर शाह जी हैरान रह गए। वे जानते थे कि इसके पैसे कहीं नहीं जायेंगे। सतगुरु की नज़र चाहिए। उनकी नज़र में ही ऋद्धि-सिद्धि है। जिन पर उनकी कृपा दृष्टि हो गई ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ उसके पीछे चली आती हैं।

कुछ दिन बाद जब सुथरे को दुकान से दूध मिठाई लेते एक महीना हो गया तो शाह जी मीरी पीरी के मालिक गुरु महाराज जी के पास जाकर बोले- 'शहनशाह, आज आपके सुथरे को मेरी दुकान से सौदा लेते एक महीना हो गया है। अतः आपका यह सेवक पैसे लेने के लिए हाज़िर हुआ है।'

सतगुरु ने सुथरे को बुलवाया। सुथरे ने आते ही सच्चे पातशाह के चरणों में नमस्कार किया और फिर आसपास खड़े सज्जनों को सत्करतार कहा। सतगुरु ने कहा, 'मज़े में है ना, कोई तकलीफ तो नहीं ना?'

'शहनशाह जिसके सिर ऊपर करतार सिरजनहार हो उसको तंगी किस बात की।' सुथरे ने कहा। इस बालक की यह बात सुनकर सत्गुरु जी ने प्रसन्न होकर पूछा : 'क्यों भाई, तू शाह से दूध और मिठाई लेता रहा है?' 'जी किस शाह से?' सुथरे ने कहा। 'यह शाह जी खड़े हैं और कौन से शाह? यह तो खुद शहनशाह के मंगते हैं, यह मुझे क्या देंगें।' सुथरे ने बड़ी गंभीरता से कहा। ''क्यों भाई मुकर क्यों रहा है? तू मेरी दुकान से आकर दूध और मिठाई नहीं खाता रहा?' शाह जी ने कहा। 'नहीं, मुझे तो मेरा करतर देता है और मैं खाता हूँ।' सुथरे ने उत्तर दिया। 'क्या? तू खा-पीकर मुकर रहा है?' शाह जी ने कहा।

मैं अकेला तो नहीं मुकर रहा, यहाँ तो हर रोज़ पाठ होता है - **केते लै लै मुकर पाए ।** सुथरे ने कहा । शहनशाह सुथरे की हाज़िर जवाबी सुनकर हंस पड़े और कहने लगे, 'इतनी तुक ही याद है कि आगे भी कुछ याद है?' 'महाराज! अगली तुक याद रखने के लिए बाकी जनता कम है, जो इतनी ही याद रह जाए काफी नहीं। और याद करके क्या करना है।' सुथरे ने कहा । शाह जी हैरान थे कि इस छोटे से बच्चे ने तो मुझे झूठा ही बना दिया था। यह तो अच्छा है कि दातार मुझे जानते थे। इधर सतगुरु बच्चे की असाधारण प्रतिभा, स्पष्टवादिता से प्रसन्न हो रहे थे। जिस बात को बड़े-बड़े लोग नहीं समझ पाते इस मेरे लाडले ने कितनी जल्दी समझ ली।